2014 का मोदी ही बन गया है आज के मोदी का सबसे बड़ा दुश्मन

अरुण माहेश्वरी

मोदी का गणित जब एक बार बिगड़ गया है तो आज 2014 का मोदी ही आज के मोदी का सबसे बड़ा दुश्मन बन गया है। मोदी का अपने को हिंदू 'हृदय-सम्राट' और 'दिव्य पुरुष' दिखाना ही उनके लिये महंगा पड़ेगा। फ्रायड ने खोई हुई चीज को पाने की लालसा से पैदा होने वाली निराशा की जिस ग्रंथी की बात कही थी, आज मोदी के संदर्भ में लोगों को वही बेहद परेशान करेगी। आज के मोदी को अपने सिर पर बैठाना अब उनके लिये असंभव होगा। अंध-राष्ट्रवादी विभ्रमकारी प्रचार भी मोदी को फिर से पाने की जनता की कोशिश से पैदा होने वाली निराशा को रोक नहीं पायेगा।

नया इंडिया अखबार में वरिष्ठ पत्रकार हरिशंकर व्यास माया, प्रियंका, ममता, तेजस्वी, केजरी जून में होंगे आईसीयू में। इसमें हरिशंकर जी ने दलील दी है कि मोदी जिस प्रकार के अंध-राष्ट्रवाद के तूफान से अपने विरुद्ध भ्रष्टाचार की चर्चाओं को मोड़ दे रहे हैं, उसे देखते हुए यदि विपक्ष की ताकतें एकजुट नहीं होती है तो वे सभी बुरी तरह से पराजित होगी। इस पर हमने टिप्पणी की कि-

इस विश्लेषण को तभी सही माना जा सकता है जब हम यह मान लें कि नरेंद्र मोदी कोरी हिंदुत्ववादी लहर पर सवार हो कर जीते थे; जब हम यह भूल जाएं कि दस साल के मनमोहन सिंह के शासन से व्यवस्था-विरोधी माहौल और भ्रष्टाचार के भारी कांडों से बनी हवा के कारण मोदी की जीत संभव हुई थी; और हम यह भी भूल जाएं कि एड़ी चोटी का पसीना एक कर देने के बाद भी मोदी-शाह गुजरात चुनाव से शुरू हुए अपने पतन को रोक पाने में पूरी तरह से विफल साबित हो रहे हैं। यह सच है कि आगामी चुनाव में मोदी की निश्चित पराजय को इतिहास की एक सबसे बुरी हार में बदलना चाहिए और इसके लिये विपक्ष की एकजुटता जरूरी है।

दरअसल, यह एक अनोखा दार्शनिक मामला है। किसी खो चुकी चीज को फिर से पूरी तरह से पाने की कोशिश की असंभवता और उससे जुड़ी विसंगतियों का मामला।

मोदी की हाल की एक के बाद एक, तमाम पराजयों की श्रृंखला यह बताने के लिये काफी है कि भारत के लोगों ने अपने भाव जगत में 2014 के मोदी को खो दिया है। अब उसे लौटाने की कोशिश का मतलब है एक खोई हुई वस्तु को खोजना, गुमशुदा चीज की तलाश। यह व्यक्ति के साथ वस्तु के संबंध को नया आयाम देता है। किसी भी वस्तु को इस प्रकार फिर से खोज निकालने की कोशिश में खुद ही ताल बिगड़ जाता है। खोई हुई वस्तु से पुरानी यादें जुड़ी होती हैं और जब उसे फिर से खोजा जाता है तो उस पर बीते हुए पल को लौटाने के असंभव की छाया पड़ जाती है। इस तलाश में आदमी को जो मिलता है वह कभी भी हूबहू पुरानी चीज नहीं हो सकता है। और यहीं से व्यक्ति -वस्तु संबंध में एक मूलभूत तनाव का प्रवेश हो जाता है। अर्थात जो खोजा जा रहा होता है, वह वह नहीं होता है जो मिलने वाला होता है। ऐसी स्थिति में स्वाभाविक तौर पर आदमी को वह तब कहीं और, किसी अन्य में दिखाई देने लगता है। गुजरात के बाद से लेकर विगत पांच राज्यों के चुनावों तक की राजनीतिक परिघटना यही बताती है।

खोई हुई वस्तु की तलाश ही आदमी में उस वस्तु से एक मूलभूत दूरी पैदा करती जाती है। यह दूरी उस वस्तु के बारे में पहले बन चुकी काल्पनिक अवधारणा के आधार पर तय होती है। मोदी की दैव पुरुष समान पूर्व धारणा ही लोगों को मोदी से अधिक से अधिक दूर करने, उन्हें फेंकू समझने का एक बुनियादी कारण भी है।

इसी सूत्र से न सिर्फ anti-incumbancy के पहलू के पीछे के सच की व्याख्या की जा सकती हैं,बल्कि किसी भी व्यक्ति के द्वारा अपने बारे में पैदा की गई झूठी अपेक्षाओं के निश्चित दुष्परिणामों की नियति को भी समझा जा सकता है।अस्तित्ववादी दार्शनिक किर्केगार्द कहते हैं कि आदमी हमेशा अतीत के दोहराव की अपेक्षा रखता है, लेकिन वह कभी पूरी नहीं होती क्योंकि दोहराव और स्मृति में मूलभूत विरोध होता है। स्मृतियों में बैठी हुई काल्पनिक धारणा को संतुष्ट करना असंभव होता है।

मोदी का गणित जब एक बार बिगड़ गया है तो आज 2014 का मोदी ही आज के मोदी का सबसे बड़ा दुश्मन बन गया है। मोदी का अपने को हिंदू 'हृदय-सम्राट' और 'दिव्य पुरुष' दिखाना ही उनके लिये महंगा पड़ेगा। फ्रायड ने खोई हुई चीज को पाने की लालसा से पैदा होने वाली निराशा की जिस ग्रंथी की बात कही थी, आज मोदी के संदर्भ में लोगों को वही बेहद परेशान करेगी। आज के मोदी को अपने सिर पर बैठाना अब उनके लिये असंभव होगा। अंध-राष्ट्रवादी विभ्रमकारी प्रचार भी मोदी को फिर से पाने की जनता की कोशिश से पैदा होने वाली निराशा को रोक नहीं पायेगा।

इसीलिये मेरा मानना है कि 2019 में मोदी की हार सुनिश्चित है। वह पराजय कितनी बड़ी होगी, यह उनके खिलाफ महागठबंधन की सफलता के अनुपात पर निर्भर करेगा।

अपना दिमाग साफ करिए, हमारे पैर नहीं...ये अपमान की पराकाष्ठा है

जितेंद्र भट्ट

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि "बाथरूम में रेनकोट पहनकर नहाना कोई मनमोहन सिंह से सीखे।" नरेंद्र मोदी ने आगे कहा कि "तीस से पैंतीस साल से आर्थिक फैसलों में मनमोहन सिंह की भूमिका रही। इस दौरान इतने घोटाले सामने आए, लेकिन मनमोहन सिंह पर दाग नहीं लगा।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ ठीक यही हुआ है। पांच साल पहले मनमोहन सिंह ने इतिहास द्वारा मूल्यांकन करने की बात अपने लिए कही थी; और फिर अपने ही भाषण में दो साल पहले नरेंद्र मोदी ने मनमोहन सिंह के लिए रेनकोट वाली बात कही। अजीब संयोग है, दोनों ही बातें नरेंद्र मोदी के सामने आ खड़ी हुई हैं।

24 फरवरी को प्रयागराज गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दो तस्वीरें सामने हैं। पहली तस्वीर में नरेंद्र मोदी कपड़े पहनकर संगम में डुबकी लगाने उतरे। तब अचानक ही नरेंद्र मोदी का 'रेनकोट' वाला जुमला लोगों को याद आ गया। नरेंद्र मोदी की ये तस्वीर हंसी मजाक का विषय बनी।

एक दूसरी तस्वीर, जिस पर गंभीर चर्चा की जरुरत है। इस तस्वीर को विरोधियों ने नौटंकी कहा। संगम में डुबकी लगाने के बाद नरेंद्र मोदी ने पूजा की। आरती की। फिर उन्होंने पांच सफाईकर्मियों के पैर धोए और उन्हें सम्मानित किया।

प्रधानमंत्री सफाईकर्मियों के पैर धोकर धन्य हुए। उन्होंने खुद ट्वीटर पर अपनी भावनाएं प्रकट की। उन्होंने लिखा, "मैं इस पल को जीवन भर याद रखूंगा।"

वाकई तस्वीर तो ऐसी ही है, जो आज तक नहीं देखी गई इन तस्वीरों और इस पल को खास बनाने के लिए बेहद खास तैयारी की गई थी। एक शानदार कमरे में पांच कुर्सियां लगी थी। इन पांच कुर्सियों पर पांच सफाईकर्मी बैठे थे।

चमचमाती पीतल की परात, लोटे, बाल्टी का इंतजाम था। सबसे अहम सेटिंग कैमरे और लाइट की थी। करीब दो से तीन मिनट के कर्मकांड के दौरान कैमरा इस तरह पैन होता रहा। जिससे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथ और चेहरे साफ-साफ दिखते रहें।कैमरा जूम इन जूम आउट भी इसी तरह हुआ कि प्रधानमंत्री के हर एक्शन को रिकॉर्ड कर सके।

वीडियो रिकॉर्डिंग के साथ-साथ शताब्दी के इस दृश्य को कैद करने के लिए स्टिल फोटोग्राफर का भी इंतजाम था। जो वीडियो नरेंद्र मोदी ने अपने ट्वीटर हैंडल के साथ शेयर किया है, उसमें कम से कम दो फोटोग्राफर साफ दिखाई दे रहे हैं।

बेशक प्रधानमंत्रीजी के इस आश्चर्यजनक काम को कैद करने वाले कैमरामैन की दाद देनी होगी। उन्होंने शानदार काम किया। ये तस्वीरें लोगों को पसंद आई। चौबीस घंटे के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस ट्वीट को बीस हजार से ज्यादा लोगों ने रीट्वीट किया। पचास हजार से ज्यादा लोगों ने लाइक का बटन दबाया।

कुछ तस्वीरों ने बयां किया। कुछ खुद नरेंद्र मोदी ने कहा। और इससे भी ज्यादा टीवी चैनल्स ने बताया। सबने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सफाईकर्मियों से बेइंतहा मुहब्बत करते हैं। प्रधानमंत्रीजी सफाईकर्मियों का सम्मान करते हैं और उनके मन में सफाईकर्मियों के काम को लेकर बड़ी इज्जत है। पर एक सवाल गले नहीं उतर रहा है। प्रधानमंत्री को सफाईकर्मियों से प्यार दिखाने का ध्यान अपनी सरकार के पांच साल पूरे होने से 90 दिन पहले ही क्यों आया?

कुछ लोग कह रहे हैं कि यही हमारे प्रिय प्रधानमंत्री का अंदाज है। वो अपने प्रेम का प्रदर्शन खुलकर करते हैं। वो अपने दिल की बात दुनिया से छिपाते नहीं। इन 'कुछ लोगों' की बात पर यकीन करना पड़ता है। क्योंकि मां हीराबेन से नरेंद्र मोदी कितना प्यार करते हैं, इसे दिखाने के लिए वो अपने साथ कैमरे लेकर जाते हैं। बेटा चाहता है कि मां के पैर छूने, उन्हें गले लगाने, उनके हाथों से लड्डू खाने, पानी पीने और आशीर्वाद लेने की हर घटना को कैमरा कैद करे। कैमरा इन दृश्यों को सिर्फ कैद ही न करे। बल्कि इस तरह कैद करे कि वो तस्वीरें यादगार बन जाएं।

सफाईकर्मियों की इज्जत और उनके लिए उमड़े प्रेम पर किसी को सवाल नहीं करने

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पैर धोती तस्वीर और बेजवाड़ा विल्सन के ये शब्द जेहन में चिपक से गए हैं - "प्रधानमंत्रीजी, अपना दिमाग साफ करिए, हमारे पैर नहीं। ये अपमान की पराकाष्ठा है।

चाहिए; पर तथ्य नरेंद्र मोदी के इस प्रेम से मेल नहीं खाते। आंकड़े चौंकाने वाले हैं, दुखी करने वाले हैं।

हर पांच दिन में एक सफाईकर्मी गटर साफ करते हुए जान दे देता है। नेशनल कमीशन फॉर सफाई कर्मचारी (एनसीएसके) के मुताबिक एक जनवरी 2017 से सितबंर 2018 के बीच हर पांच दिन में एक सफाईकर्मी की मौत सीवर और सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान हुई। इस दौरान 123 सफाईकर्मियों की मौत सीवर या सेप्टिक टैंक साफ करते हुए हुई।

संभव है कि सफाई कर्मचारियों के लिए काम करने वाली संस्था नेशनल कमीशन फॉर सफाई कर्मचारी (एनसीएसके) के आंकड़े प्रधानमंत्रीजी के संज्ञान में न हों। जो प्रेम प्रधानमंत्रीजी की तस्वीरों के जरिए पूरी दुनिया ने देखा है; उसे महसूस करते हुए ये भी संभव लगता है कि मोदी सरकार को अभी तक किसी ने सफाईकर्मियों की सीवर और गटर में हो रही मौतों के बारे में बताया ही न हो। चौंकाने वाली बातें तो कभी भी और कहीं भी हो सकती हैं !

सीवर और गटर की हाथ से सफाई के खिलाफ मूवमेंट चलाने वाले सफाई कर्मचारी आंदोलन (एसकेए) का दावा और ज्यादा हैरान करने वाला है। सफाई कर्मचारी आंदोलन (एसकेए) के मुताबिक 2014 से 2016 के बीच सीवर और गटर की सफाई के दौरान 1500 लोगों की मौत हुई। चौंकाने वाली बात ये है कि हाथों से सीवर और गटर की सफाई करवाना 1993 से गैरकानूनी है। पर 1993 से 2013 तक इसे लेकर एक भी सजा नहीं हुई। सामाजिक-आर्थिक जातिगत जनगणना (Socio-Economic Caste Census, 2011) के आंकड़े बताते हैं कि देशभर में 1.82 लाख परिवार ऐसे हैं, जिनका कम से कम एक सदस्य हाथ से सीवर और गटर की सफाई के काम में लगा है। ऐसे लोगों की संख्या महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा है। महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों के 65,181 परिवारों में कम से कम एक सदस्य हाथ से गटर और सीवर की सफाई के काम में लगा हुआ है। दूसरा नंबर मध्य प्रदेश का है, यहां 23,105 परिवार इस काम से जुड़े हैं।

प्रधानमंत्रीजी की सफाईकर्मियों के पैर धोने वाली तस्वीर एक तरफ है। पर दूसरी तरफ टट्टी और सीवर की गंदगी में डूबे ये आंकड़े हैं। हर पांच दिन में एक मौत, और गटर में सिर तक डूबे सफाईकर्मियों की तस्वीर देखता हूं; तो नरेंद्र मोदी की पैर धोती तस्वीर झूठ, फरेब और भौंडी दिखती है।

तभी तो सफाई कर्मचारी आंदोलन के नेता और रमन मैग्सेसे अवार्ड से सम्मानित बेजवाड़ा विल्सन प्रधानमंत्री की पैर धोने वाली तस्वीर देखकर नाराज हैं। उन्होंने ट्विटर पर लिखा, "उनके काम करने के हालात सुधारने के लिए सरकार कुछ नहीं करती। पिछले दो महीनों में 13 लोगों की मौत हुई है।"

बेजवाड़ा विल्सन की बातों को हल्के में नहीं लिया जा सकता। वो लगातार सफाईकर्मियों के साथ काम कर रहे हैं, उनके सुख दुख के साथी हैं। बेजवाड़ा विल्सन कहते हैं कि-

"वह (प्रधानमंत्री) सफाईकर्मियों के पांव पकड़ते हैं, तो वह यह संदेश दे रहे हैं कि आप (सफाईकर्मी) बहुत तुच्छ हैं और मैं महान हूं। इससे किसको फायदा होता है? इनके पैर धोकर वह खुद को महान दिखा रहे हैं। यह बहुत खतरनाक विचारधारा है।"

ये बताता है कि कैमरे के सामने सम्मान और हकीकत का फर्क क्या है? जब हकीकत कड़वी हो, तो गुस्सा आना लाजिमी है। यही बात बेजवाड़ा विल्सन के गुस्से की वजह है। उन्होंने एक दूसरे ट्वीट में लिखा, "प्रधानमंत्रीजी, अपना दिमाग साफ करिए, हमारे पैर नहीं। ये अपमान की पराकाष्ठा है। 1.6 लाख महिलाएं अभी भी गंदगी उठाने के लिए मजबूर हैं। इनके लिए पांच साल में एक भी शब्द नहीं बोला। शर्मनाक है।"